रमज़ान की यादें

नसीम अख्तर

सुन्दर-सुन्दर रंगीन टोपियों, खजूरों, तरह-तरह की सेवइयों लाल, पीली, नीली, हरी, चमकीली चूड़ियों, आकर्षक रंगीन चमकदार कपड़ों से गुलज़ार बाज़ार, फिज़ाँ में फैली इत्र और कुलचा, शीरमाल, हलीम, बिरयानी जैसे पकवानों की खुशबू! चेहरों पर बरसता नूर और हर तरफ उत्साह और उमंग का माहौल! हर तरफ हसरत और खुशी की निगाह से देखते, चहकते बच्चे। चारों ओर रौनक ही रौनक! बाज़ारों का यह नज़ारा साल के एक महीने में होता है – इस महीने में जिसे रमज़ान शरीफ कहते हैं।

रमज़ान का महीना इबादत का महीना होता है। इस महीने लोग हर बुराई से बचने की कोशिश करते हैं। सूरज उगने से सूरज डूबने तक रोज़ा रखते हैं। यानी न कुछ खाते हैं न पीते हैं – पानी भी नहीं। लेकिन ढाई साल का नन्हा आबिद अभी नहीं जानता कि अल्लाह-रसूल क्या है। वह क्या जाने कि नमाज़, रोज़ा क्या है। उसकी अपनी एक अलग दुनिया है। लेकिन जब वह अपने अम्मी-अब्बू के साथ बाज़ार जाता है तो उसका नन्हा-सा मन उमंग से भर जाता है। वह ज़िद करके तीन-चार सुन्दर टोपियाँ खरीद लेता है। चमकदार कपड़ों की ओर खिंचा जाता है। हर चीज़ को हसरत भरी निगाहों से देखता है। कुछ चीज़ें मम्मी-पापा दिला देते हैं। बाकी चीज़ों की हसरत लिए वह घर चला आता है। घर में सभी लोग रोज़ा रखते हैं तो उसके भी दिल में रोज़ा रखने की चाहत होती है। वह अम्मी से रोज़ा रखने की ज़िद करता है। अम्मी उसे बहलाने के लिए कह देती हैं, "हाँ, तू है तो रोज़े से।" दिनभर खाते-पीते रहकर भी वह यह मानकर चलता है कि वह रोज़े से है।

शाम को जब लोग इफ्तारी की तैयारी करते हैं तो उसका सभी से बस एक ही सवाल होता, "कब रोज़ा खुलेगा।" रसोई में जाकर बार-बार अम्मी से पूछता है, "अम्मी, यह सब मेरे लिए बना रही हो न!" कभी भाईजान के साथ वज़ू (हाथ-मुँह धोना। खुद को पूरी तरह से पवित्र करने की रस्म) बनाने बैठ जाता है तो कभी अब्बू के साथ। जब अम्मी दस्तरखान बिछाकर इफ्तारी का सामान सजाती हैं और सब लोग दुआ पढ़ रहे होते हैं तब वह भी दोनों हाथ उठाकर दुआ पढ़ने लगता है।

रमज़ान शरीफ में केवल आबिद ही नहीं कई बच्चे ऐसा करते हैं। आठ साल की रिज़वाना घर में सब बड़ों, रिश्तेदारों और मुहल्लेवालों को रोज़ा रखते देखती है। उसके हम-उम्रों ने भी अब रोज़ा रखना शुरू कर दिया है। अम्मी ने उससे कहना भी शुरू कर दिया है कि उसके ऊपर अब रोज़ा फर्ज़ हो गया है। इसलिए उसने अपना पहला रोज़ा आठ साल की उम्र में रखा। धूमधाम से उसकी रोज़ा कुशाई (पहले रोज़े का जश्न) हुई।

सात साल का तौफीक अपनी दोस्त समरा की रोज़ा कुशाई में गया था। वहाँ बहुत-से लोग आए थे। उसे बहुत-से लोगों से पैसे मिले थे। भाईजान उसके लिए सुन्दर और कीमती कपड़े लाए थे। उसके अम्मी-अब्बू ने फकीरों को खाना भी खिलाया था। तौफीक की तमन्ना है कि उसकी रोज़ा कुशाई भी ऐसी ही हो।

नौ साल के करीम ने अल्ताफ रज़ा की रोज़े वाली कैसेट सुन रखी है। वह अपनी तुलना उस बच्चे से करता है जिसने रोज़ा रखा था और अल्लाह को प्यारा हो गया मगर रोज़ा नहीं तोड़ा था। उस बच्चे का ज़िक्र आज भी आता है।

रुखसार ने देखा है कि रोज़ा रखो तो दोस्त, टीचर और अम्मी-अब्बू सभी कितनी मुलायमियत से पेश आते हैं। किसी बात पर डाँटते भी नहीं हैं। इन्हीं सबके चलते ही तो बच्चे अपना पहला रोज़ा रखते हैं। घर वालों से कहकर सोते हैं कि सहरी के वक्त जगा देना।

बहुत छोटे बच्चे अगर रोज़ा रखने की ज़िद करते हैं तो उनके माँ-बाप उन्हें एक दाड़ का रोज़ा रखवाते हैं। उनसे कहते हैं कि एक दाड़ का रोज़ा रख लो। एक दाड़ से खाना एक से मत खाना। ताकि बच्चों की बात भी रह जाए और उन्हें कोई नुकसान भी न हो। जैसे, रज़िया की ज़िद पर अम्मी ने उसे पाँच साल की उम्र में आधे दिन का रोज़ा रखवाया था। यह कहकर कि अल्लाह पाक ने बच्चों के लिए आधे दिन के रोज़े का नियम भी बनाया है।

रमज़ान तीस या उन्तीस दिनों का होता है। सहरी के वक्त मस्ज़िद से मौलाना माइक से रोज़दारों को जगाते हैं, "सहरी का वक्त हो गया रोज़ेदारो उठो!"

हर पाँच-सात मिनट पर रोज़ेदारों को आगाह करते रहते हैं कि "सहरी का वक्त खत्म होने में अभी आधा घण्टा ... अभी पन्द्रह मिनट बचे हैं। जल्दी करें।" और जब वक्त खत्म हो जाता है तो आवाज़ आती है, "सहरी का वक्त खत्म हो गया।" कहीं-कहीं पर दरवाज़े खटखटाकर भी रोज़ेदारों को जगाने का रिवाज़ है। रोज़ा इफ्तारी (रोज़ा खोलना) आमतौर पर खजूर से की जाती है। प्लेटों में सजाकर इफ्तारी अपने इफ्तार के समय पटाखे भी जलाए जाते हैं।

रिश्तेदारों और मुहल्लेवालों के घर भिजवाई जाती है। कहीं-कहीं सहरी और इफ्तार के समय पटाखे भी जलाए जाते हैं।

रमज़ान के आखिरी जुमे (शुक्रवार) को अलविदा कहते हैं। 29 या 30 दिनों के रोज़ों के बाद ईद आती है। चाँद रात (जब ईद का चाँद दिखता है) के चाँद के दीदार की तमन्ना हर दिल में होती है। चाँद रात उल्लास और खुशी की रात होती है। घरों में ईद की तैयारी में पकवान बनने लगते हैं। घर सज-धज जाते हैं। दोस्त, रिश्तेदार मिलते-जुलते हैं। बच्चों को ईदी के तौर पर पैसे-तोहफे मिलते हैं। ईद पर सिवईयाँ, शीर-खुरमे खासतौर पर बनाए जाते हैं। ईद तीन दिनों तक मनाई जाती है।

रमज़ान की सिवइयों-शीर जैसी मीठी यादें आज भी ताज़ा हैं। तुम रमज़ान को कैसे याद करते हो? अपने दोस्तों से तुम रमज़ान के बारे में और जान सकते हो।

तुम सबको ईद मुबारक।

चित्रः कनक